इकाई 5 देशांतरण

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 देशांतरणः औचित्य, संकल्पना, स्वरूप और गुण

- 5.2.1 समाजशास्त्रीय औचित्य
- 5.2.2 संकल्पनाएँ
- 5.2.3 स्वरूप
- 5.2.4 गुण

5.3 देशांतरण के कारण

- 5.3.1 आर्थिक
- 5.3.2 सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक

5.4 देशांतरण के परिणाम

- 5.4.1 आर्थिक
- 5.4.2 जनसांख्यिकी
- 5.4.3 सामाजिक और मनोवैज्ञानिक

5.5 शरणार्थियों और विस्थापितों की समस्याएँ

5.6 देशांतरण नीति

5.7 सारांश

5.8 शब्दावली

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा ध्यान देशांतरण पर जनसांख्यिकी प्रक्रिया और समाज में सामाजिक परिवर्तन के रूप में है । इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- देशांतरण को व्याख्यायित कर सकेंगे;
- सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में देशांतरण के महत्व का परीक्षण कर सकेंगे;
- देशांतरण के विभिन्न कारणों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- ऐसे देशांतरण के परिणामों की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में चर्चा कर सकेंगे; और
- देशांतरण नीति का विश्लेषण कर सकेंगे ।

5.1 प्रस्तावना

देशांतरण की परिभाषा सामान्यतया लोगों के सामान्य निवास स्थान के भौगोलिक परिवर्तन के रूप में की जाती है । किंतु यह अस्थायी और कम दूरी की गति से पृथक है । देशांतरण

आन्तिरक (राष्ट्रीय सीमान्तर्गत) या अंतर्राष्ट्रीय (अंतर्राष्ट्रीय रीमा के पार) हो सकता है । भाग 5.4 में देशांतरण के सामाजिक औचित्य और परिभाषा ओर संकल्पना की चर्चा के बाद हम सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीति और धार्मिक संदर्भ में देशांतरण के मुख्य निर्धारक कारकों की चर्चा करेंगे । देशांतरण के प्रकार यथा – ग्रामीण और शहरी, साथ ही साथ स्वैच्छिक और अस्वैच्छिक को भाग 5.5 में व्याख्यायित किया गया है । जब लोग राष्ट्रीय सीमा के अंतर्गत अथवा राष्ट्रीय सीमा के पार गतिमान होते हैं, तो क्या परिणाम सामने आते हैं, की चर्चा भाग 5.6 में की गई है और भाग 5.7 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर प्रकाश डालता है । इस इकाई के भाग 5.8 में देशांतरण को प्रभावित करते राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नीतियों और देशांतरण की भविष्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया है ।

5.2 देशांतरणः औचित्य, संकल्पना, स्वरूप और गुण

इस इकाई में आपको देशांतरण के समाजशास्त्रीय औचित्य और गुणों के विभिन्न आयामों से परिचित कराया जाएगा । आइए, इसके औचित्य से आरंभ करें ।

5.2.1 समाजशास्त्रीय औचित्य

देशांतरण जनसंख्या परिवर्तन का तीसरा घटक है, अन्य दो घटक हैं – मृत्यु दर और प्रजनन क्षमता, जिसका हमने इस खंड की इकाई 4 में अध्ययन किया है । तथापि, देशांतरण दो अन्य प्रक्रियाओं – मृत्यु दर और प्रजनन क्षमता से इस अर्थ में पृथक है कि उपर्युक्त दोनों की तरह यह जैविक कारक नहीं है, जो जैविक रूपरेखा के अंतर्गत क्रियाशील होता हो, यद्यपि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होता है । देशांतरण प्रभावित लोगों की इच्छा से प्रभावित होता है । सामान्यतः प्रत्येक देशांतरण की गतिविधि तय की जाती है, अपवाद की स्थिति में ऐसा नहीं भी हो सकता है। अतः देशांतरण मानव जीवन का आर्थिक, सामाजिक और जनसांख्यिकी पर्यावरणीय बलों के प्रति व्यक्त संवेदना है ।

देशांतरण का अध्ययन जनसंख्या अध्ययनों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि प्रजनन क्षमता और मृत्यु दर के साथ यह जनसंख्या वृद्धि के आकार और दर को निर्धारित करता है साथ ही उसकी संरचना और गुणों का निर्धारण भी करता है । देशांतरण किसी देश की जनसंख्या वितरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है और किसी क्षेत्र के श्रम-शक्ति विकास को निर्धारित करता है । इस प्रकार, देशांतरण समाज में सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण लक्षण है ।

5.2.2 संकल्पनाएँ

सामान्य जन की भाषा में "देशांतरण" शब्द लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने को कहते हैं । जनसांख्यिकी शब्दकोश के अनुसार, "देशांतरण भौतिक गत्यात्मकता या एक भौगोलिक इकाई से दूसरे के मध्य स्थानिक गत्यात्मकता है । सामान्यतया इसमें उत्पत्ति या जन्म स्थान से आवास परिवर्तित होकर गंतव्य स्थान में चला जाता है।" इस प्रकार के देशांतरण को स्थाई देशांतरण कहते हैं और इसे अन्य प्रकार की गतियों, जिसमें आवास का स्थाई परिवर्तन नहीं होता है, इसे पृथक रखना चाहिए । एवरेस्ट ली, एक सुविख्यात जनसांख्यिकीविद् देशांतरण को विस्तृत रूप से "स्थायी या अर्धस्थायी आवास परिवर्तन" के रूप में परिभाषित करते हैं । गति की दूरी या स्वैच्छिक, अस्वैच्छिक प्रकृति पर कोई बंधन नहीं दिया गया है । इसेन्सटाड्स के अनुसार, देशांतरण इंगित करता है "किसी व्यक्ति या

समूह के एक समाज से दूसरे समाज में भौतिक संक्रमण को । यह संक्रमण सामान्यतया एक सामाजिक परिवेश का परित्याग कर दूसरे को ग्रहण करने की प्रक्रिया को समाहित करता है"। मंगलम भी अपनी परिभाषा में लोगों के स्थायी विस्थापन पर दबाव देते हैं और देशांतरण को अपेक्षाकृत, लोगों के एक समूह द्वारा जिन्हें देशांतरित कहा जाता है, एक भौगोलिक स्थान से दूसरे में, स्थायी रूप से जाने को कहते हैं । यह देशांतरितों के निर्णय द्वारा गतिमान होता है । वे दो तुलनात्मक परिस्थितियों में मूल्यों के समुच्चयों का मापन और विचार करते हैं जो देशांतरितों के अंतःक्रियात्मक पद्धति में परिवर्तन का कारक होता है । छुट्टियों में घूमने जाना और नाविकों का पेशा इसमें समाहित नहीं है । मेहता ने राजस्थान के अपने अध्ययन में देशांतरण को गति की क्रिया या स्थानिक गत्यात्मकता के रूप में चित्रित किया है ।

इन सभी परिभाषाओं की समीक्षा यह इंगित करती है कि लगभग सभी विद्वानों ने समय और स्थान पर जोर दिया है और देशांतरण को स्थायी या अर्धस्थायी, एक स्थान से दूसरे स्थान को, गति के रूप में देखा है । संक्षेप में, जब कोई व्यक्ति अपना जन्म स्थान छोड़कर शहरी क्षेत्रों में आता है, कोई रोजगार शुरू करता है और वहाँ रहने लगता है, तो वह देशांतरण के रूप में जाना जाता है और क्रिया को देशांतरण कहा जाता है ।

5.2.3 स्वरूप

लोग देश के विभिन्न राज्यों में या राज्य के विभिन्न जिलों में या विभिन्न देशों में जा सकते हैं। अतः, आंतरिक और बाह्य देशांतरण के लिए भिन्न पदों का उपयोग किया जाता है । आंतरिक देशांतरण एक ही देश में एक स्थान से दूसरे स्थान में गमन को इंगित करता है, जबकि बाह्य देशांतरण या अंतर्राष्ट्रीय देशांतरण एक देश से दूसरे देश में गमन को इंगित करता है ।

क) **आप्रवासन और उत्प्रवासनः** "आप्रवासन" किसी दूसरे देश में देशांतरण को कहते हैं और "उत्प्रवासन" देशान्तरगमन को । ये पद मात्र अंतर्राष्ट्रीय देशांतरण के संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं । उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमरीका या कनाडा में बस जाने के उद्देश्य से भारत छोड़ते देशांतरण संयुक्त राज्य अमरीका या कनाडा के आप्रवासी और भारत के उत्प्रवासी हुए ।

ख) **अंतःप्रवासन और बाह्य देशांतरणः** ये पद सिर्फ आंतरिक देशांतरण में प्रयुक्त होते हैं । "अंतःदेशांतरण" किसी खास क्षेत्र में देशांतरण को इंगित करता है । इस प्रकार, बिहार और उत्तर प्रदेश के लिए बाह्य देशांतरित हुए । पद "अंतः देशांतरण" देशांतरणों के गंतव्य क्षेत्र के संदर्भ में प्रयुक्त होता है और "बाह्य देशांतरण" देशांतरितों के जन्म स्थान या प्रस्थान के क्षेत्र के संदर्भ में ।

देशांतरण के मुख्य रूपों को मानचित्र के आकार में प्रदर्शित किया जा सकता है –

मानचित्र 1

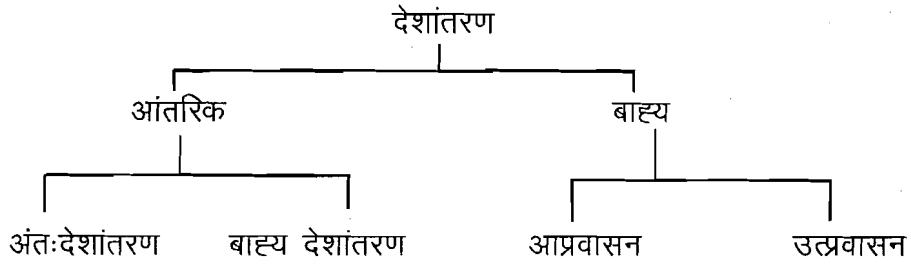

किसी देश में आंतरिक देशांतरण के तीन महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं । ये हैं – राष्ट्रीय जनगणना, जनसंख्या बही और सैम्पल सर्वेक्षण । भारत में आंतरिक देशांतरण से संबंधित आँकड़ों के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं– राष्ट्रीय जनगणना और सैम्पल सर्वेक्षण ।

ग) भारत में आंतरिक देशांतरण के स्वरूप

भारत में देशांतरण से संबंधित सूचना समग्र रूप में और इसके विभिन्न भागों के लिए जनगणना के द्वारा प्राप्त किया जाता है । हाल के जनगणना आँकड़ों में बेहतर और सूक्ष्म प्रश्न पूछे गए हैं । वे देशांतरण पर हो रहे अध्ययनों में सुधार को दर्शाते हैं ।

भारतीय जनगणना 1872 के बाद से जन्म स्थान से देशांतरण की धाराओं की गणना प्रस्तुत करते हैं । तथापि, 1961 में जन्म स्थान ग्रामीण और शहरी रूपों में विभाजित था और स्थान देशांतरण के चार वर्ग: (i) जन्म स्थान के जिले के अंतर्गत, (ii) जिले के बाहर किंतु जन्मे राज्य के अंतर्गत, (iii) जन्म राज्य के बाहर यथा – अंतर्राज्यीय, और (iv) देश के बाहर, भी विभाजित थे । 1971 की जनगणना ने अंतिम आवास स्थान और 1981 की जनगणना ने देशांतरण के कारणों, जैसे प्रश्नों का समावेश कर इनके आँकड़ों को परिभाषित किया।

भारत में देशांतरितों को चार देशांतरण धाराओं – ग्रामीण से ग्रामीण, ग्रामीण से शहरी, शहरी से शहरी और शहरी से ग्रामीण में वर्गीकृत किया गया है । 1961 से ग्रामीण से ग्रामीण देशांतरण मुख्य देशांतरण धारा रही है । समय के साथ ग्रामीण से शहरी और शहरी से शहरी देशांतरण में भी महत्वपूर्ण वृद्धि होती रही है । अन्य महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि ग्रामीण से ग्रामीण देशांतरण में स्त्रियों के अनुपात कहीं ज्यादा है, जबकि अन्य तीन धाराओं में पुरुषों का अनुपात ज्यादा है। यह किस प्रकार संभव होता है। औरतों का आवास उनके विवाह के बाद परिवर्तित हो जाता है और नया स्थान पड़ोस में, जिले में हो सकता है ।

समय-समय पर शोधकर्ताओं ने स्थान, काल, आयतन और दिशा को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के देशांतरण सुझाए हैं । स्थान के आधार पर आंतरिक देशांतरण की चार महत्वपूर्ण धाराएँ हैं । ये हैं:

i) ग्रामीण से ग्रामीण,

ii) ग्रामीण से शहरी,

iii) शहरी से शहरी,

iv) शहरी से ग्रामीण।

भारतीय जनगणना यह चार प्रकार का वर्गीकरण दर्शाती है । तथापि, कतिपय विकसित और अत्यधिक शहरीकरणयुक्त देशों में भी नगरों से उपनगर की ओर देशांतरण होता है ।

इन देशांतरण धाराओं का सापेक्षिक आकार और महत्व भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न हो सकता है । कतिपय देशों में ग्रामीण से ग्रामीण देशांतरण ही मुख्य देशांतरण प्रकार है, जबकि दूसरे में यह ग्रामीण से शहरी है और कई अन्य में देशांतरितों का सबसे बड़ा अनुपात शहरी से शहरी का पाया जाता है । भारत में, यथापूर्व में स्पष्ट किया गया है, 1961, 1971, 1991 और 2001 की जनगणना में ग्रामीण से ग्रामीण देशांतरण ही मुख्य देशांतरण धारा थी । तथापि, समय के परिवर्तन के साथ ग्रामीण से शहरी देशांतरण के अनुपात में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई और यह वृद्धि 1960 के दशक की अपेक्षा 1970, 1980 और 1990 के दशकों में

कहीं ज्यादा हुई । देश में प्रमुख रूप से जो देशांतरण हुआ वह ग्रामीण से ग्रामीण था। गांव से शहर की ओर देशांतरण हुआ और इसमें अन्य सभी धाराओं में (ग्रामीण से शहरी, शहरी से शहरी और शहरी से ग्रामीण) पुरुषों का वर्चस्व रहा है, यद्यपि, यह ग्रामीण से शहरी धाराओं में कहीं ज्यादा रहा है । ग्रामीण से शहरी देशांतरण में पुरुषों के वर्चस्व का कारण देश के अन्य भागों का कृषि क्षेत्र में विकसित होना हो सकता है । खास राज्यों और नगरों में उद्योगों का विकास ग्रामीण से शहरी देशांतरण व दूसरा महत्वपूर्ण कारक हो सकता है। ग्रामीण से ग्रामीण देशांतरण में मुख्यतया औरतों का वर्चस्व रहा है । स्त्री देशांतरण मुख्य रूप से विवाह के क्रम में हुआ है, क्योंकि हिन्दू प्रथा के अनुसार दुल्हन दूसरे गाँव से लाई जाती हैं (ग्रामीण बहिर्विवाह) । राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे के अनुसार 46 प्रतिशत से ज्यादा शहरी क्षेत्रों में देशांतरण भी विवाह के कारण होता है । प्रथम संतानोत्पत्ति के लिए दुल्हन का अपने माता-पिता के यहाँ जाने की प्रथा भी आंतरिक देशांतरण का महत्वपूर्ण कारण है ।

समय पर आधारित वर्गीकरण ने देशांतरण को लंबी अभिसीमा देशांतरण और छोटी अभिसीमा या मौसमी देशांतरण के रूप में वर्गीकृत किया है । जब कोई लंबे समय के लिए जाता है तो इसे लंबी अभिसीमा देशांतरण कहा जाता है । वस्तुतः, जब एक प्रदेश ने दूसरे में जनसंख्या का स्थायी विस्थापन होता है, तो इसे स्थायी देशांतरण कहा जाता है । किंतु जब लोग अस्थायी कार्य केंद्र पर कुछ महीनों के लिए जाते हैं, और रहते हैं तो इसे आवधिक या मौसमी देशांतरण से अभिहित किया जाता है । उदाहरण के लिए, व्यस्त कृषि मौसम में अधिक श्रमिकों की आवश्यकता होती है और आसपास के लोग मौसमी कार्य करने के लिए वहाँ पहुँच जाते हैं ।

इन दो प्रमुख प्रकारों के अतिरिक्त स्वैच्छिक या अस्वैच्छिक या बलपूर्वक कुशलता उत्सारण (जवान कुशल लोगों का देशांतरण) और शरणार्थियों और विस्थापितों का देशांतरण हो सकता है ।

5.2.4 गुण

देशांतरितों और देशांतरण के कुछ महत्वपूर्ण गुण होते हैं । एक खास गुण है – देशांतरितों का उम्र सापेक्ष होना । सामान्यतया, युवक अधिक गतिशील होते हैं । अधिकांश देशांतरण अध्ययनों, खासकर विकासशील देशों में पाया गया है कि ग्रामीण-शहरी देशांतरित मुख्यतया नव वयस्क और अपेक्षाकृत सुशिक्षित लोग होते हैं वनिस्पत उनके जो जन्म स्थान पर रह जाते हैं । यह स्पष्ट है कि रोजगार के लिए देशांतरण अधिकांश युवक ही करते हैं । स्त्री देशांतरण का बड़ा भाग जो विवाह से संबंधित होता है, युवावस्था में ही होता है । इस प्रकार लोगों में वयःसंधि और तीस के मध्य (15-35) गतिशील होने की प्रवृत्ति होती है, वनिस्पत अन्य अवस्थाओं के।

अन्य महत्वपूर्ण गुण है कि देशांतरितों की प्रवृत्ति उन स्थानों में जाने की है, जहाँ पूर्व देशांतरण किए लोगों का संपर्क है जो एक कड़ी का निर्माण करता है और श्रृंखलाबद्ध देशांतरण के रूप में जाना जाता है । अनेकों अध्ययन यह प्रदर्शित करते हैं कि लोग आँखें मूँदकर नये स्थानों पर नहीं चले जाते हैं । अक्सर उनके देशांतरण के पीछे संबंधियों और मित्रों की कड़ी और नेटवर्क होता है जो विभिन्न तरीकों से उनकी मदद करते हैं । कतिपय स्थितियों में, देशांतरित न केवल समान गंतव्य का चयन करते हैं, अपितु वे समान पेशा भी करते हैं । उदाहरण के लिए शोध यह उजागर करता है कि जयपुर के खास होटलों में लगभग सभी नौकर कुमाऊँ के एक उप-प्रदेश के होते हैं । हरियाणा और पंजाब के कृषि मजदूर मुख्यतया बिहार और उत्तर प्रदेश के होते हैं ।

बोध प्रश्न 1

i) देशांतरण का समाजशास्त्रीय औचित्य क्या है ? लगभग छः पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) देशांतरण को परिभाषित करने में किन महत्वपूर्ण परिवर्तियों का उपयोग किया गया है? चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए ।

.....

.....

.....

.....

iii) निम्नांकित प्रकार के देशांतरणों को वर्गीकृत कीजिए :

क) केरल से खाड़ी देशों में

.....

ख) केरल से दिल्ली को

.....

ग) बिहार से वेस्ट इंडीज को

.....

घ) बांग्लादेश से लोगों का भारत आने को

.....

च) लोगों का कर्नाटक से राजस्थान आने को ।

.....

5.3 देशांतरण के कारण

यह जानना आवश्यक है कि क्यों कुछ लोग देशांतरण करते हैं, जबकि अन्य नहीं । महत्वपूर्ण कारक जो लोगों को देशांतरण करने के लिए प्रेरित करते हैं, को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है : आर्थिक कारक, जनसांख्यिकी कारक, सामाजिक-सांस्कृतिक कारक और राजनीतिक कारक ।

5.3.1 आर्थिक

वस्तुतः, स्वैच्छिक देशांतरण का मुख्य कारण आर्थिक होता है । अधिकांश विकासशील देशों में निम्न कृषि आय, कृषिजन्य रोजगार और अर्धरोजगार आदि मुख्य कारक हैं जो देशांतरितों को रोजगार के बेहतर अवसरों के क्षेत्र की ओर प्रेरित करते हैं । जनसंख्या दबाव और परिणामी उच्च जन-भूमि औसत को गरीबी के एक महत्वपूर्ण कारकों के रूप में देखा जाता है जिसके कारण बाह्य देशांतरण होता है । इस प्रकार, लगभग हर अध्ययन यह इंगित करता है कि अधिकांश देशांतरित बेहतर आर्थिक अवसरों की खोज में ही निकले होते हैं । यह आंतरिक और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही देशांतरणों के लिए एक समान सच है ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारकों, जो देशांतरण को प्रेरित करते हैं, को "स्थान छोड़ने के कारक" और "लोगों को आकर्षित करने के कारक" के रूप में परिभाषित किया जाता है । दूसरे शब्दों में इनके द्वारा यह जाना जाता है कि लोग जन्म स्थान छोड़कर, परिस्थितियों की बाध्यता द्वारा स्थान छोड़ने के बाद जाते हैं या वे नये स्थान के आकर्षक परिस्थितियों द्वारा सम्मोहित होकर देशांतरण करते हैं । आइए, इन कारकों की थोड़ी विस्तार से चर्चा करें ।

i) स्थान छोड़ने के कारक

स्थान छोड़ने के कारक वे हैं, जो विभिन्न कारणों से व्यक्ति को जन्म स्थान को छोड़कर किसी अन्य स्थान पर जाने को बाध्य करते हैं । उदाहरण के लिए, गरीबीजन्य विपरीत आर्थिक स्थिति, निम्न उत्पादकता, बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों की समाप्ति और प्राकृतिक आपदाएं लोगों को बेहतर आर्थिक अवसरों की खोज में घर छोड़ने को बाध्य कर सकते हैं । अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा प्रायोजित एक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि श्रमिकों को कृषि कार्य छोड़कर अन्य रोजगार पेशे की तलाश में जाने का मुख्य कारक, उनकी गरीबी है। क्योंकि सामान्यतया कृषि में अर्थतंत्र के किसी अन्य क्षेत्र के मुकाबले आमदनी कम होती है। योजना आयोग के अनुमान के अनुसार ग्रामीण जनसंख्या का एक-तिहाई से ज्यादा भाग गरीबी रेखा के नीचे गुजर कर रहा है । जनसंख्या में हुई तीव्र वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति उपलब्ध कृषि क्षेत्र में कमी हुई और ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारों और अर्ध-बेरोजगारों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण लोग शहर की ओर ठेले जा रहे हैं । ग्रामीण क्षेत्रों में आमदनी के वैकल्पिक साधनों की अनुपलब्धता भी देशांतरण का अन्य कारण है । इसके साथ-साथ संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था और तत्संबंधी नियम जो संपत्ति के विभाजन पर रोक लगाए होते हैं, भी युवकों को काम की तलाश में शहरों की ओर देशांतरण करने का बाध्य करते हैं । यहाँ तक कि खेतों के उप-विभाजन, जिससे इतने छोटे टुकड़े बनते हैं, जिस पर एक परिवार बसर नहीं कर सकता है, देशांतरण को बढ़ावा देता है ।

ii) लोगों को आकर्षित करने के कारक

लोगों को आकर्षित करने के कारक उन कारकों को कहते हैं, जो किसी क्षेत्र विशेष में देशांतरितों को आकर्षित करते हैं, यथा – बेहतर रोजगार के अवसर, उच्च मजदूरी दर, बेहतर काम की स्थितियाँ और जीवन की बेहतर सुविधाएँ इत्यादि । जब उद्योग, वाणिज्य और व्यापार का त्वरित विकास होता है, तो सामान्यतया नगर की ओर देशांतरण होता है। हाल के वर्षों में भारतीयों की संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और अब मध्य-पूर्व में बड़ी संख्या में लोगों के देशांतरण का कारण बेहतर रोजगार के अवसरों का उपलब्ध होना है । उच्च मजदूरी और जीवन की बेहतर सुविधाएँ, विभिन्न प्रकार के पेशों में अपने रुचि के अनुकूल काम पसंद करने की सुविधा आदि जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में मदद करते हैं।

कभी-कभी बेहतर सांस्कृतिक और अनुरजनिक प्रकारों और शहर की चकाचौंध भी देशांतरितों को नगरों की ओर आकर्षित करती हैं । तथापि, लोगों को आकर्षित करने के कारक मात्र ग्रामीण-शहरी देशांतरण में ही नहीं, अपितु अन्य प्रकार के आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय देशांतरण में भी प्रभावकारी होते हैं ।

कभी-कभी एक प्रश्न पूछा जाता है कि कौन-सा कारक ज्यादा महत्वपूर्ण है – स्थान छोड़ने के कारक या लोगों को आकर्षित करने के कारक। कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि स्थान छोड़ने के कारक या लोगों को आकर्षित करने के कारक की अपेक्षा अधिक शक्तिवान हैं क्योंकि शहरी आकर्षणों की अपेक्षा ग्रामीण समस्याएँ ही जनसंख्या के विस्थापन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं । दूसरी ओर, वे जो लोगों को आकर्षित करने के कारकों को ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं, शहरी पूँजी निवेश और परिणामी बढ़ते रोजगार और व्यापारिक अवसरों और शहरी जीवन क्रम के बढ़ते आकर्षण पर ज्यादा जोर देते हैं ।

स्थान छोड़ने के कारक और लोगों को आकर्षित करने के कारकों को देशांतरण की धारणाओं के लिए वर्गीकृत करना देशांतरण के निर्धारकों के विश्लेषण में लाभकारी है, किंतु सिर्फ इन्हीं कारकों के माध्यम से तमाम देशांतरणकारी गतियों को व्याख्यायित नहीं किया जा सकता है । तथापि, कभी-कभी देशांतरण स्थान छोड़ने के कारक और लोगों को आकर्षित करने के कारकों से पृथक-पृथक प्रभावित न होकर संयुक्त रूप से प्रभावित होते हैं।

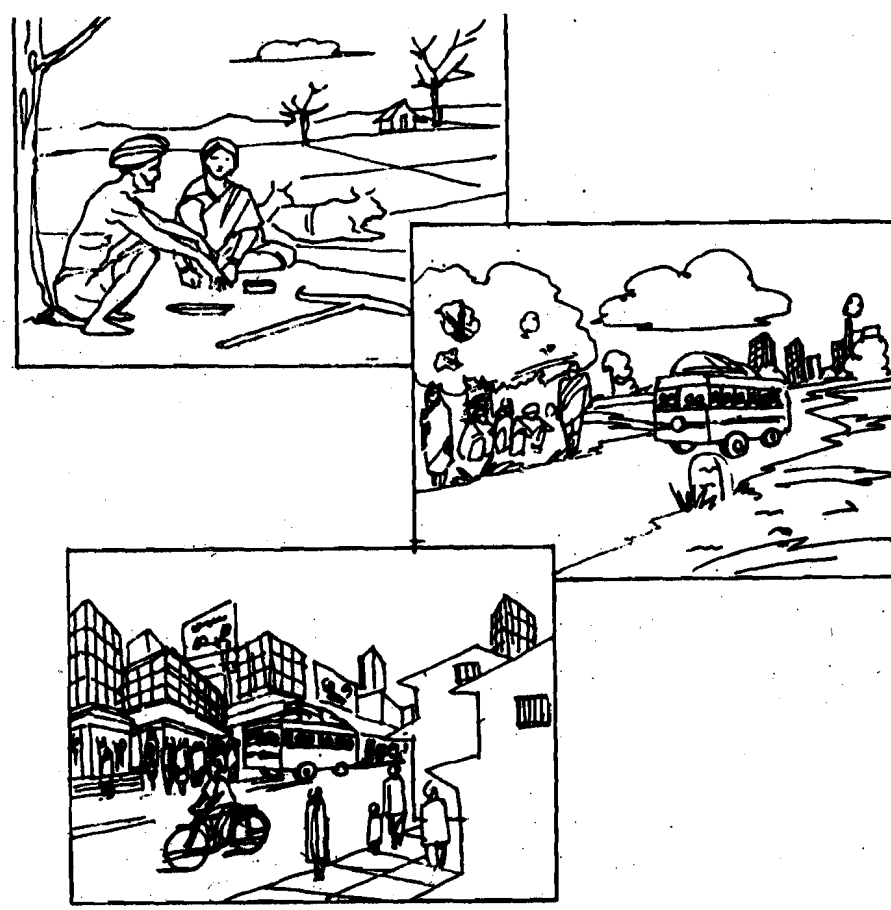

iii) **वापस भेजने वाले कारक**

भारत में, और अन्य विकासशील देशों में भी, अन्य महत्वपूर्ण कारक जो देशांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं – "वापस भेजने वाले कारक" हैं । भारत में, आशीष बोस के अनुसार, शहरी श्रम शक्ति अत्यधिक है और शहरी बेरोजगारी की दर काफी है और अर्ध-

बेरोजगारों की लम्बी कतारें हैं । ये सभी कारक ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में आने वाले देशांतरितों की नयी धारा को विपरीत रूप से प्रभावित करते हैं । वे इन्हें "वापस भेजने वाले कारक" के रूप में अभिहित करते हैं। वे कहते हैं कि अगर शहरी क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर उत्पन्न होते हैं, और अगर किसी विशेष कुशलता की स्थिति नहीं हो, तो प्रथम व्यक्ति जो इसे हस्तगत करेगा वह है – शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाला सीमान्त रोजगार।

5.3.2 सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक

ढकेलते और घींचते कारकों के अतिरिक्त देशांतरण में सामाजिक और सांस्कृतिक कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । कभी-कभी पारिवारिक विग्रह भी देशांतरण का कारण बनता है। विकसित संचार व्यवस्थाएँ, यथा – परिवहन, रेडियो और दूरदर्शन का प्रभाव, सिनेमा, शहरीकृत शिक्षा और परिणामी प्रवृत्तियों और मूल्यों में परिवर्तन भी देशांतरण को बढ़ावा देते हैं ।

कभी-कभी राजनीतिक कारक भी देशांतरण को बढ़ावा या निरुत्साहित करते हैं । उदाहरण के लिए, हमारे देश में, " स्थानीय लोगों के लिए कार्यनीति" का राज्य सरकारों द्वारा स्वीकरण निश्चित रूप से अन्य राज्यों से देशांतरण को प्रभावित करेगा । बम्बई में शिव सेना का उत्थान और इसका देशांतरितों के प्रति घृणा और स्थानीय विशिष्ट राष्ट्रीयता के नाम पर यदा-कदा उभरती हिंसा, एक महत्वपूर्ण घटना है । कलकत्ता में भी बंगाली-मारवाड़ी संघर्ष का दूरगामी परिणाम होगा और अब आसाम और तमिलनाडु अन्य ऐसे उदाहरण हैं। इस प्रकार, राजनीतिक प्रवृत्ति और लोगों की दृष्टि भी बहुत हद तक देशांतरण को प्रभावित करती हैं । पंजाब और कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों के कारण भी देशांतरण हुए हैं।

कोष्ठक 1: देशांतरण के कारण

जनगणना के आँकड़ों का विश्लेषण

भारतीय जनगणना में देशांतरण के कारणों का आँकड़ा सर्वप्रथम 1981 की जनगणना में संग्रह किया गया । ये कारण निम्नांकित तालिका में दिए जा रहे हैं :

तालिका 1: प्रत्येक लिंग का स्थायी देशांतरण वितरण प्रतिशत देशांतरण के कारणों के द्वारा, भारत, 1981

लिंग	देशांतरण के लिए कारण	कुल	ग्रामीण से ग्रामीण	शहरी से ग्रामीण	शहरी से शहरी	शहरी से ग्रामीण
पुरुष	रोजगार	30.79	19.49	47.49	41.12	27.00
	शिक्षा	5.15	4.18	8.07	5.20	3.17
	संबंधित	30.57	33.74	23.54	31.52	31.89
	विवाह	3.05	5.46	1.17	0.99	2.23
	अन्य	30.44	37.12	19.73	21.18	35.73
		100.00	100.00	100.00	100.00	100.00
स्त्री	रोजगार	1.92	1.13	4.20	4.46	3.34
	शिक्षा	0.88	0.43	2.58	2.21	1.00
	संबंधित	14.72	8.64	29.27	35.89	21.23
	विवाह	72.34	81.73	51.53	43.56	59.33
	अन्य	10.14	8.07	12.42	13.88	15.10
		100.00	100.00	100.00	100.00	100.00

पुरुष देशांतरितों के ग्रामीण से शहरी और शहरी से शहरी आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि रोजगार सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है । इन देशांतरण धाराओं के अनुसार शिक्षा मात्र 3 से 8 प्रतिशत देशांतरण का कारण है । औरतों में, जैसा कि अनुमानित था, विवाह देशांतरण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है और उसके बाद संबंधित देशांतरण । रोजगार और शिक्षा औरतों के बहुत थोड़े देशांतरण का कारण है ।

आर्थिक कारकों के अतिरिक्त, कभी-कभी शैक्षणिक अवसरों की कमी, चिकित्सकीय सुविधाएँ और पारंपरिक ग्रामीण संरचना की रुकावटों से बाहर निकलने की इच्छा के साथ-साथ अन्य सुविधाएँ भी लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों से बाहर ढकेलती हैं । तथापि, ढकेले जाने वाली स्थितियों से उत्पन्न सभी देशांतरण ग्रामीण क्षेत्रों में ही सीमित नहीं है, लोग अविकसित और अल्प समृद्ध से विकसित और समृद्ध क्षेत्रों की ओर देशांतरण करते रहे हैं।

अभ्यास

यह पता लगाइए कि आपके पड़ोस के दो परिवारों में, जब वे यहाँ आये तो कितने सदस्य शहर के बाहर पैदा हुए हैं और उनके यहाँ आने के पीछे क्या कारण थे? तब इन स्थितियों से देशांतरणों के कारणों और प्रकारों का विस्तारित करने की कोशिश करें । अपनी टिप्पणी की, अगर हो सके तो, अध्ययन केंद्र के अन्य छात्रों के साथ तुलना करें ।

बोध प्रश्न 2

सही उत्तर पर टिक (√) का निशान लगाइए ।

i) ग्रामीण लोगों के बाह्य देशांतरण के महत्वपूर्ण कारणों में एक है:

क) जनसंख्या का बढ़ता दबाव

ख) ग्रामीण गरीबी

ग) ग्रामीण बेरोजगारी

घ) उपर्युक्त सभी ।

ii) कारक जो देशांतरण के लिए देशांतरितों को आकर्षित करते हैं:

क) ठेलते कारक

ख) घींचते कारक

ग) पीछे ठेलते कारक

घ) उपर्युक्त सभी।

iii) निम्नांकित में से कौन देशांतरण का एक प्रकार नहीं है?

क) ग्रामीण से ग्रामीण

ख) ग्रामीण से शहरी

ग) शहरी से शहरी

घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं ।

5.4 देशांतरण के परिणाम

देशांतरण के विभिन्न परिणाम होते हैं । तथापि, इस इकाई में चर्चित कुछ महत्वपूर्ण परिणाम हैं – आर्थिक, जनसांख्यिकी, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक । ये परिणाम लाभप्रद और नुकसानदेह, दोनों हैं । इनमें से कुछ छोड़े गए स्थान को और कुछ गंतव्य स्थान को प्रभावित करते हैं ।

5.4.1 आर्थिक

अधिक श्रमिकों वाले प्रदेश से देशांतरण उस प्रदेश के श्रम की औसत उत्पादकता को बढ़ाने में मदद करते हैं क्योंकि इससे श्रम के कुशल और बेहतर उपयोग करने की प्रवृत्ति का विकास होता है । दूसरी ओर, ऐसी धारणा है कि देशांतरण उत्प्रवासन प्रदेश को विपरीत रूप से प्रभावित करता है और आप्रवासन क्षेत्र को लाभ पहुँचाता है और अपेक्षाकृत कम विकसित प्रदेश से विकसित प्रदेशों में कुशल लोगों के देशांतरण के कारण प्रादेशिक असमानता में वृद्धि होती है । किंतु अगर ग्रामीण क्षेत्रों में वैकल्पिक अवसरों का अभाव है, तो अधिक समाज के उद्यमी सदस्यों के बहिर्गमन को नुकसान नहीं माना जा सकता है । जब तक देशांतरण अतिरिक्त श्रम को आकर्षित करता रहता है, यह उत्प्रवासन क्षेत्र को लाभ ही पहुँचाता है । इसका प्रतिकूल प्रभाव तभी पड़ता है, जब प्रदेश की प्रगति की कीमत पर मानव संसाधनों का उत्सारण होता है । अन्य महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि जब देशांतरण बेरोजगारों और अर्ध-बेरोजगारों का होता है तो यह क्षेत्र के बाकी बचे लोगों की स्थिति को सुधारने में मदद करता है क्योंकि प्रति व्यक्ति खपत में, देशांतरण के कारण वृद्धि होती है।

तथापि, श्रम शक्ति भेंजने वाला क्षेत्र आर्क रूप से लाभान्वित होता है और क्योंकि देशांतरित पैसों के साथ लौटते हैं । भारत में, ग्रामीण आबादी का शहरों में आने के कारण शहरों से गाँवों की ओर धन गमन का स्थिर मार्ग प्रशस्त हुआ है। अधिकांश देशांतरित अकेले पुरुष होते हैं जो शहरी रोजगार प्राप्ति के बाद अपनी आमदनी का एक हिस्सा अन्य साधनों पर पल रहे अपने ग्रामीण परिवार के भरण-पोषण के लिए भेजते हैं । साथ ही, यह परिवार के बचत को भी प्रभावित करता है क्योंकि कभी-कभी देशांतरित अपने साथ पैसा (पारिवारिक बचत) लेकर जाते हैं, जो उनकी यात्रा और नये स्थान पर जाकर रहने के लिए आवश्यक होता है । हाल के समय में, मध्य-पूर्व में देशांतरण में हुई अचानक वृद्धि के कारण हमारे देश में विदेशी मुद्रा के प्रेषण में अत्यधिक वृद्धि हुई है । 1979 में यह पाया गया कि केरल जैसे छोटे राज्य का वार्षिक प्रेषण 4000 मिलियन रुपया था ।

खाड़ी देशों से आते पैसों के कारण गृह-निर्माण, कृषि-भूमि की खरीद और व्यापार और उद्योगों में निवेश हुआ । इसने पारिवारिक खपत बढ़ाने में भी योगदान दिया है । पैसे बच्चों की शिक्षा पर भी खर्च किए जाते रहे हैं । दूसरी ओर, लोगों के बहिर्गमन ने श्रम शक्ति के अभाव की स्थिति उत्पन्न कर मजदूरी में वृद्धि कर दी है ।

5.4.2 जनसांख्यिकी

देशांतरण का, छोड़ते और गंतव्य प्रदेशों के उम्र, लिंग और पेशागत संयोजन पर सीधा असर पड़ता है । अविवाहित युवकों के देशांतरण के फलस्वरूप लिंग अनुपात में असंतुलन आया है । गाँवों से युवकों का पलायन अन्य समूहों, यथा – औरत, बच्चों और बूढ़ों के अनुपात की वृद्धि करता है । इसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में जन्म दर में कमी आने की प्रवृत्ति आती है । ग्रामीण पुरुषों का अपनी पत्नी से लंबे समय के लिए पृथकता भी जन्म दरों में कमी का कारण बनती है ।

5.4.3 सामाजिक और मनोवैज्ञानिक

शहरी जीवन देशांतरितों में कतिपय सामाजिक परिवर्तन लाते हैं । ऐसे देशांतरित जो समय-समय पर लौटकर अपने जन्म स्थान जाते रहते हैं या किसी प्रकार के संपर्क में रहते हैं, के द्वारा भी कुछ नवीन विचार ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचते रहते हैं। अनेक अध्ययन लौटते देशांतरितों की गत्यात्मकता को तकनीकी परिवर्तन का कारण मानते हैं जो अपने साथ पैसा,

ज्ञान और विभिन्न उत्पादन तकनीकों का अनुभव लाते हैं । जो कृषि का मशीनीकरण और व्यापारीकरण कर सकता है । एक बड़ी संख्या में पूर्व सैनिक, सेवानिवृत्ति के बाद अपने गाँवों को जाते हैं और इनका अपने गाँवों में प्रयोग करते हैं । शहरी और विभिन्न संस्कृतियों का संपर्क भी देशांतरितों की प्रवृत्ति में परिवर्तन का कारण होता है और उन्हें अधिक आधुनिक अभिविन्यास और उपभोक्ता संस्कृति का विकास करने को प्रेरित करता है ।

दूसरी ओर देशांतरण जिसके कारण परिवार के वयस्क पुरुष लंबे समय के लिए परिवार से बाहर रहते हैं, बहुधा परिवार के विखंडन का कारण बन जाता है और औरतों और बच्चों को विभिन्न प्रकार के काम करने पड़ते हैं और परिवार के नीति निर्धारण में भागीदारी करनी पड़ती है । अध्ययनों ने केरल में परिवारों से पुरुषों की अनुपस्थिति के अनेक दुखद परिणाम दिखाए हैं । न्यूरोसिस, हिस्टीरिया और कुण्ठा देशांतरित पुरुषों की स्त्रियों में वृद्धि करता है । खाड़ी धूम ने परिवारों के मानसिक स्वास्थ्य की बलि ली है ।

बोध प्रश्न 3

i) किस प्रकार मजदूर भेजने वाला प्रदेश देशांतरण की प्रक्रिया से लाभान्वित होता है? लगभग सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) देशांतरण के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिणामों के बारे में लिखिए। लगभग सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) सही उत्तर पर टिक (√) का निशान लगाइए ।

शरणार्थियों का विशाल संख्या में बहिर्गमनः

क) गन्तव्य देश के लिए कोई समस्या उत्पन्न नहीं कर सकता है।

ख) गन्तव्य देश के लिए आर्थिक समस्या उत्पन्न कर सकता है।

ग) गन्तव्य देश के लिए मात्र स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी समस्या उत्पन्न कर सकता है।

घ) शरणार्थियों के आयतन के अनुसार सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है ।

5.5 शरणार्थियों और विस्थापितों की समस्याएँ

कभी-कभी राजनीतिक और धार्मिक बाधाओं या युद्ध के कारण लोग बाध्य होकर पलायन करते हैं । ऐसी गलियाँ लोगों को पड़ोसी देशों की ओर ले जाकर शरणार्थी के रूप में खड़ा कर देती हैं। संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज ऐसे हर व्यक्ति को शरणार्थी घोषित करता है, जो "जाति, धर्म राष्ट्रीयता, किसी खास सामाजिक समूह या राजनीतिक धारणा की सदस्यता के कारण अत्याचार के भय से अपनी राष्ट्रीयता के देश से बाहर है और जो उपर्युक्त भय के कारण पुनः उसी देश में वापस जाने से कतराता है"। (सं.रा. 1984) ।

इस प्रकार, बड़ी संख्या में लोगों का अंतर्राष्ट्रीय पलायन राजनीतिक, धार्मिक या जातीय चरित्र की बाध्यता के कारण हुआ है । शायद इस सदी का सबसे बड़ा पलायन भारतीय उप-महाद्वीप में ही हुआ है । 1947 में देश का भारतीय गणराज्य और पाकिस्तान के विभाजन ने प्रत्येक देश में एक दूसरे से बड़ी संख्या में लोगों को पलायन करने को बाध्य किया । अनुमानतः लगभग 7 मिलियन लोग भारत से पाकिस्तान गए और लगभग 8 मिलियन पाकिस्तान से भारत आए । 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के कारण भी बड़ी संख्या में लोग पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) से भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में शरणार्थी बनकर आए और प्रदेश के लिए एक स्थायी समस्या बनकर रह गए हैं । ठीक उसी प्रकार जैसे बिहारी मुसलमानों की समस्या पाकिस्तान और बांग्लादेश के लिए है ।

इतिहास के कुछ सर्वाधिक विशाल बलात अंतर्राष्ट्रीय देशांतरण एशिया में हाल के समय में हुए हैं। उदाहरण के लिए, 1975 के बाद के बारह वर्षों में लगभग 1.7 मिलियन से अधिक शरणार्थियों ने वियतनाम, कंपूचिया और लाओस से पलायन किया है । 1979 की रूस के अफगानिस्तान में हस्तक्षेप के फलस्वरूप 2.7 मिलियन लोग भागकर पाकिस्तन में और 1.5 मिलियन ईरान में स्थायी तौर पर रहने को चले गए । इनमें से अधिकांश अब तक पड़ोसी देशों में तंबुओं में रह रहे हैं । हाल में, श्रीलंका में उत्पन्न राजनीतिक व्यवधानों के कारण बड़ी संख्या में तमिल भारत आए हैं और तमिलनाडु में रह रहे हैं ।

यह देखा जाता है कि मानवता के आधार पर अक्सर शरणार्थियों को विभिन्न देशों की सरकार द्वारा आश्रय दिया जाता है । तथापि, शरणार्थियों का अचानक वेग स्थानीय समाज पर अत्यधिक दबाव उत्पन्न करता है । इसके कारण आवश्यक वस्तुओं की कमी, पारिस्थितिकी असंतुलन और स्वास्थ्यजन्य विपदाएँ शरण देने वाले देश के समक्ष समस्या बनकर खड़ी होती है । विशाल आकार और विभिन्न आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक आयाम अनेक समस्याओं को उत्पन्न करते हैं, खासकर गंतव्य देश के लिए । कभी-कभी वे गंतव्य देश में राजनीतिक अशांति उत्पन्न कर देते हैं । वे समूहों का निर्माण कर स्वयं

को संगठित करते हैं और सरकार को छूट देने के लिए दबाव डालते हैं । उदाहरण के लिए, इंग्लैण्ड, कनाडा और श्रीलंका देशांतरण के कारण जातीय संकट का सामना कर रहे हैं । कभी-कभी यह स्थानीय लोगों और देशांतरितों के मध्य भिड़ंत भी करा देता है । श्रीलंका इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

5.6 देशांतरण नीति

भारत में अंतर्राष्ट्रीय और आंतरिक देशांतरण के प्रतिमान को नियंत्रित करने के संबंध में अल्प ध्यान दिया गया है । अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश में आप्रवासियों और उत्प्रवासियों का नवीनतम आँकड़ा भी उपलब्ध नहीं है, यद्यपि अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय देशांतरण पारपत्र और वीजा अनुमति इत्यादि के द्वारा नियंत्रित होता है । विभिन्न मंचों से भारत से मेघा-उत्सारण से संबंधित प्रश्न उठाए गए हैं, किंतु इसे रोकने के संदर्भ में कोई कारगर कदम नहीं उठाया गया है क्योंकि देश में पर्याप्त संख्या में शिक्षित बेरोजगार पड़े हुए हैं । यह भी हाल ही की घटना है कि भारत सरकार के श्रम मंत्रालय ने भारतीय उत्प्रवासियों के हित की रक्षा के लिए एक सेल की स्थापना की है जो अन्य देशों में, खासकर मध्य-पूर्व में कुशल श्रमिक, अर्ध-कुशल श्रमिक और अकुशल श्रमिक की तरह कार्यरत हैं ।

राष्ट्रीय स्तर पर सरकार ने आंतरिक देशांतरण से संबंधित समस्याओं के लिए कोई रुचि नहीं दिखाई है और इस प्रकार किसी नीति का निर्माण नहीं हो पाया है । यद्यपि ग्रामीण से ग्रामीण देशांतरण जैसा कि पूर्व में बताया गया है, ने पुरुषों और स्त्रियों में देशांतरण की मुख्य धारा का निर्माण किया है । यद्यपि 1981 की जनगणना के अतिरिक्त इस देशांतरण को प्रभावित करते कारकों के संबंध में अति अल्प जानकारी है । चूँकि ग्रामीण से ग्रामीण देशांतरण का अधिकांश भाग संबंधित या अस्पष्ट कारणों से है, इसे ज्यादा स्पष्टता के साथ समझना आवश्यक है ।

देश के विभिन्न भागों में, खासकर उन भागों में जो हरित क्रांति से गुजर रहे हैं, कृषि श्रमिकों का मौसमी देशांतरण बड़ी संख्या में होता है । इन देशांतरितों के आयतन और उनके ठहरने की अवधि के बारे में कोई खास जानकारी उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण से शहरी देशांतरण, ग्रामीण से ग्रामीण देशांतरण के बाद सबसे अधिक संख्या में होता है और यह शहरीकरण नीतियों और कार्यक्रमों द्वारा प्रभावित होता है । चौथी और पाँचवीं पंचवर्षीय योजनाओं में आर्थिक गतिविधियों के स्थानिक वितरण के सामंजस्य पर बल दिया गया था और बड़े नगरों के अनियंत्रित विकास को रोकने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था ।

नगरों (मिलियन आबादी से ऊपर) के त्वरित विकास से उत्पन्न समस्याओं को स्वीकारते हुए सरकार अब ऐसी नीतियों को लागू करना चाह रही है, जो बड़े नगरों की ओर देशांतरण को नियंत्रित करने में सहयोगी होंगी । 1980 के दशक में छोटे शहरों के पर्याप्त संरचनात्मक और अन्य सुविधाओं के विकास पर जोर दिया गया था ताकि वे ग्रामीण प्रदेशों के विकास और सेवा केंद्र के रूप में अपनी भूमिका अदा कर सकें । योजना आयोग ने छोटे और मध्य दर्जे के शहरों में नये उद्योगों और अन्य वाणिज्यिक और पेशागत संस्थानों की आवश्यकता पर बल दिया । इस खंड की इकाई 6 में हम इन समस्याओं की विस्तार से समीक्षा करेंगे।

इस प्रकार, किसी विशेष देशांतरण नीति के अभाव में भविष्य के देशांतरण प्रवाह की दिशा के बारे मं भविष्यवाणी करना कठिन है । तथापि, सरकार की छोटे, मध्यम और माध्यमिक नगरों के विकास पर बल देने की नीति को देखते हुए यह आशा की जाती है कि माध्यमिक

नगर और मध्यम शहर भविष्य में अधिक देशांतरितों को आकर्षित कर पाएंगे । यद्यपि बढ़ते उद्योगों के साथ औद्योगिक नगर नये देशांतरितों को आकर्षित करते ही रहेंगे, शिक्षित युवक-युवतियों में छोटे शहरों और नगरों में सफेदपोश काम पाने की अधिक प्रवृत्ति रहेगी।

बोध प्रश्न 4

सही उत्तर पर टिक (√) का निशान लगाएँ ।

i) हाल के वर्षों में भारत सरकार के श्रम मंत्रालय ने भारतीय उत्प्रवासियों के हित की रक्षार्थ एक सेल की स्थापना की है, जो कार्यरत है:

   क) दूसरे देशों में सिर्फ कुशल श्रमिकों के रूप में।

   ख) दूसरे देशों में सिर्फ अकुशल श्रमिकों के रूप में।

   ग) दूसरे देशों में सिर्फ अर्ध-कुशल श्रमिकों के रूप में।

   घ) उपर्युक्त सभी ।

ii) सरकार की छोटे, मध्यम और मध्यस्थ नगरों को विकसित करने की प्रवृत्ति से यह आशा की जाती है कि:

   क) मध्यस्थ नगर भविष्य में अधिक देशांतरितों को आकर्षित करेंगे और बड़े नगरों का महत्व कम होता जाएगा ।

   ख) यद्यपि बड़े नगर देशांतरितों को आकर्षित करते रहेंगे किंतु शिक्षित युवक-युवतियों में छोटे शहरों और नगरों में सफेदपोश कार्य पाने की प्रवृत्ति अधिक होगी ।

   ग) भविष्य में ग्रामीण से शहरी देशांतरण रुक जाएगा ।

   घ) उपर्युक्त सभी सही हैं ।

5.7 सारांश

इस इकाई में हमने व्याख्यायित किया है कि देशांतरण, जो लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया को समाहित करता है, एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकी क्रिया है जो किसी देश की जनसंख्या के स्थानिक वितरण को प्रभावित करता है । तब हमने उन कारकों पर प्रकाश डाला है, जो लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए प्रेरित करते हैं । इसी से संबंधित है गति के प्रकार जो लोग दिशा और गति की अवधि के संदर्भ में करते हैं, और ये गतियाँ स्वैच्छिक या अस्वैच्छिक हैं । तब हम देशांतरण के परिणामों पर आते हैं । दूसरे शब्दों में, उन जगहों, जहाँ से लोग चलते हैं और जहाँ पहुँचते हैं, का क्या परिणाम होता है । हमने शरणार्थियों और विस्थापितों द्वारा उत्पन्न की जाने वाली समस्याओं की चर्चा की है । अंत में, देशांतरण नीति पर प्रकाश डाला है ।

5.8 शब्दावली

प्रजनन क्षमता : प्रजनन की जैविक संभावनाएँ।

देशांतरण : एक खास समय के लिए लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

मृत्यु दर : एक खास समय में यह किसी देश की मृत्यु का अनुपात है ।

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

सिन्हा और अताउल्ला, 11987, *माइग्रेशन इन इंटरडिसीप्लीनरी एप्रोच,* सीमा पब्लिशर्स, दिल्ली।

प्रेमी, एम.के 1980, *अरबन आउट माइग्रेशनः ए स्टडी ऑफ इट्सनेचर एंड कंस्क्वेंसेज,* स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) देशांतरण मानव के परिवेश में कार्यरत आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जनसांख्यिकी बलों के प्रति संवेदना का परिणाम है । यह जनसंख्या वृद्धि के आकार और दर निर्धारित करता है, साथ ही साथ इसकी संरचना और गुणों और किसी क्षेत्र के श्रमिक बलों को भी निर्धारित करता है । यह सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण लक्षण है ।

ii) विद्वान समय और स्थान पर एक महत्वपूर्ण परिवर्ती के रूप में बल देते हैं और देशांतरण को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थायी या अर्ध-स्थायी रूप से गति के रूप में परिभाषित करते हैं ।

iii) क) उत्प्रवासन,

ख) बाह्य-देशांतरण,

ग) आप्रवासन,

घ) अंतः देशांतरण।

बोध प्रश्न 2

i) क) घ

ख) ख

ग) घ

बोध प्रश्न 3

i) चूँकि देशांतरण श्रम के उचित उपयोग के लिए प्रेरित करता है, अतः यह उस क्षेत्र के श्रमिकों को उत्पादकता को बढ़ाता है । यह प्रदेश देशांतरितों द्वारा लाए गए पैसों से आर्थिक रूप से लाभान्वित होता है । इसके कारण उपभोक्ता शिक्षा, उत्पादन की तकनीक के स्तर में वृद्धि होती है ।

ii) अनेक स्थितियों में देशांतरण के कारण परिवार से लंबे समय के लिए पुरुष सदस्य बाहर रहते हैं । यह परिवार के विखंडन का कारण बन जाता है । इन परिस्थितियों में औरतें, बच्चे अक्सर अधिक भार वहन करते हैं । उन्हें पूर्व की अपेक्षा अधिक कार्य करना पड़ता है । अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि हिस्टीरिया और कुण्ठा की समस्या केरल के प्राव्रजिक पुरुषों की स्त्रियों में बढ़ रही है ।

iii) घ

बोध प्रश्न 4

i) घ

ii) ख